# सारा देश हमारा

केरल से कारगिल घाटी तक,
गोहाटी से चौपाटी तक,
सारा देश हमारा,
जीना हो तो मरना सीखो,
गूँज उठे यह नारा,
सारा देश हमारा,
केरल से कारगिल घाटी तक...

लगता है ताज़े कोल्हू पर जमी हुई है काई,
लगता है फिर भटक गई है भारत की तरुणाई,
कोई चीरो ओ रणधीरो!
ओ जननी के भाग्य लकीरो!
बलिदानों का पुण्य मुहूर्त आता नहीं दुबारा,
जीना हो तो मरना सीखो गूँज उठे यह नारा,
सारा देश हमारा,
केरल से कारगिल घाटी तक...

घायल अपना ताजमहल है, घायल गंगा मैया,
टूट रहे हैं तूफ़ानों में नैया और खेवैया,
तुम नैया के पाल बदल दो,
तूफ़ानों की चाल बदल दो,
हर आँधी का उतार हो तुम, तुमने नहीं विचारा,
जीना हो तो मरना सीखो गूँज उठे यह नारा,
सारा देश हमारा,
केरल से कारगिल घाटी तक...
संकट अपना बाल सखा है इसको कंठ लगाओ,
क्या बैठे हो न्यारे-न्यारे मिलकर बोझ उठाओ,
भाग्य-भरोसा कायरता है,
कर्मठ देश कहाँ मरता है,
सोचो तुमने इतने दिन में कितनी बार हुंकारा,
जीना हो तो मरना सीखो गूँज उठे यह नारा,
सारा देश हमारा,
केरल से कारगिल घाटी तक...

—बालकवि बैरागी

## शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| कोल्हू | — | तेल निकालने का एक यंत्र |
| काई | — | नमी वाली जगहों पर उगने वाली एक वनस्पति |
| तरुणाई | — | जवानी, युवावस्था |
| मुहूर्त | — | शुभ कार्य हेतु निश्चित समय |
| खेवैया | — | नाविक |
| पाल | — | नाव को हवा से चलाने के लिए लगाया गया कपड़ा |
| विचारा | — | सोचा, विचार किया |
| न्यारे-न्यारे | — | अलग-अलग |
| कर्मठ | — | कर्म में विश्वास रखने वाला |
| हुंकारा | — | ललकारा, आह्वान किया |

# सारा देश हमारा

## सारांश (Summary)

सारा देश हमारा' कविता में कवि 'बाल कवि बैरागी' जी मानते है अपना भारत देश जो केरल से कारगिल तक तथा गोहाटी से चौपाटी तक फैला है। वे मानते है इस देश के प्रति हमे असीम प्रेम रखना है। इस देश के युवा वर्गो को प्रोत्साहित करते हुए कहते है कि यदि तुम्हे सुकुन पूर्वक जीना है तो उठो और अपने देश के खातिर मरना सीखो। ये युवा वर्ग ही है जो देश की खराब परिस्थितियों से जूझकर अपनी कर्मठता से उसे बदल सकता है।

जिस प्रकार त्रुटिपूर्ण कोल्हू (तेल निकालने का पात्र) में काई जम जाने से फिर उससे काम नही लिया जा सकता, उसी प्रकार यदि देश के युवा शक्ति ही पथ भ्रष्ट हो जाए तो देश का उद्धार कैसे होगा तथा वे अपना लक्ष्य कैसे प्राप्त कर पायेंगे।

कवि कहते है, हे युवाओं अपने अंदर वो जोश लाओ, अपने खून की गर्माहट को पहचानो। आज देश कितनी कठिनाई परिस्थितियों से गुजर रहा है। देश का उद्धार तुमसे ही सम्भव है।

भाग्य-भरोसे रहना तो कायरता है। कर्म को अपना धर्म मानने वाला कभी नही मरता अत: नौजवानों जागो तथा देश को बँटने से रोको। देश को घायल होने से बचाओ।

प्रश्न: 1. कवि ने भारत की तरुणाई को भटका हुआ क्यों कहा है?

उत्तर : भारत के तरुण आज दिक्भ्रष्ट हो चुके है उन्हे स्वार्थ ने ग्रस लिया है। उन्हे अपने कर्तव्य का पालन करना, अपने उत्तरदायित्व को कंधे पर उठाना होगा। वे अपने स्वार्थ के आगे नही सोच पाते। आज जब देश को उनकी जरूरत है, देश का उद्धार उनके हाथों होना है तो वही आज देश को विदेशियों के हाथों असम्मानित और घायल होते चुपचाप देख रहे है क्योंकि आज वे मोह, माया, लोभ, ईर्ष्या से ग्रस्त हो चुके है। इस प्रकार वे भटक गए है।

प्रश्न: 2. संकट से उभरने का कवि क्या उपाय सुझाते है?

उत्तर: संकट जो हमारे देश भारत पर आई है, उससे उभरने के लिए हम भारतियों को अलग - अलग नही बल्कि एक सूत्र में बँधकर उनका मुकाबला करना है। जो भाग्य के भरोसे बैठा रहता है, सफलता कभी उनके हाथ नही लगती, ो संकट से जूझने के लिए सदा तत्पर रहता है और मुसीबत से घबराता नही. सफलता उसकी कदम चूमती है

अत: आज जब इस संकटकाल में देश को वीर, शहीदो की जरूरत है तो हमे कायर न बनकर पूरे जोश के साथ उन संकटो का मुकाबला करना है। इसमे यदि हमारे प्राण भी निकल जाये तो भी, हँसते हँसते अपने देश को बचाने के लिए इस पर न्योछावर हो जाना है।

तभी तो कवि बालकवि बैरागी जी "जीना हो तो मरना सीखो" यही नारा लगाकर आगे बढ़ना है।

H.W प्रश्न 1. तूफान किसे नष्ट - भ्रष्ट कर रहे हैं और कवि उनसे कैसे निपटने को कहते है?

प्रश्न 2. भाग्य - भरोसे रहना कायरता क्यों कही गई है?